परास्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

रिजवाना बेगम

शोध छात्रा (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा संकाय
नेहरू ग्राम भारती डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी,
इलाहाबाद।

भूमिका–

मानव प्रकृति की सर्वोत्तम कृति है। नीत्से का यह कथन उल्लेखनीय है कि मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो हमेशा अपने आप में शर्मिन्दा होता है। वह मौलिक रूप से आदर्शवादी है और सदा आदर्श को प्राप्त करने का प्रयास करता रहता है। वह जितना अपने आस–पास की वस्तुओं से असंतुष्ट रहता है, उतना ही अपने आप से भी, और हमेशा इन दोनों की संवृद्धि में संलग्न रहता है। वही (मनुष्य) केवल ऐसा प्राणी है जिसमें तर्क है, कारण और परिणाम का सम्बन्धीकरण है। उसमें ही केवल यह योग्यता है कि वह अपने आपकी आलोचना कर सकता है। यही कारण है कि मनुष्य अन्य प्राणियों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, ''शिक्षा वही है जिससे चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होता है। इस अर्थ में लिखने पढ़ने का ज्ञान देने के साथ ही शिक्षा व्यक्ति के आचरण विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण मानवता के लिए लाभदायक होती है।''

प्रख्यात विचारक पेस्टालॉजी ने शिक्षा के अभिप्राय को व्यक्त करते हुए लिखा है कि ''शिक्षा बालक की आन्तरिक शक्तियों का स्वभाविक और प्रगतिशील विकास है।'' इस परिभाषा में बालक के व्यक्तित्व के चतुर्दिक एवं संतुलित विकास पर बल दिया गया है।

किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए स्वस्थ शरीर के साथ–साथ स्वस्थ मस्तिष्क का होना अत्यन्त आवश्यक है। व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य का जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उसके समायोजन पर प्रभाव पडता है। मानसिक रूप से व्यक्ति तभी स्वस्थ रहेगा जब उसका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा होगा और शारीरिक स्वास्थ्य तभी अच्छा होगा जब उसका सामाजिक–आर्थिक स्तर अच्छा होगा। अभिभावक से सम्बन्ध अच्छे होने का मतलब उसका खान–पान, वेश–भूषा, रहन–सहन अच्छा होगा।

आज के भौतिकवादी एवं अर्थवादी युग में बदलती सामाजिक व्यवस्था से बदलते हुए मूल्यों से भारत जैसे परम्परागत देश में बालकों को अनेक अनुभवों से गुजरना पड़ता है। अधिकांश लोग (माता–पिता) अपने बच्चों को समझाने में असमर्थ है। माता–पिता की अभिवृत्तियों

Scanned with CamScanner

में भी परिवर्तन हो रहे है, जिसमें घर तथा विद्यालय में समायोजन करने में बच्चों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है अर्थात वह ठीक प्रकार से समायोजन नहीं कर पा रहे हैं, जिसके कारण उनमें अनेक प्रकार के लक्षण जैसे मानसिक स्वास्थ्य एवं संवेग सम्बन्धी उत्पन्न हो जाते है जैसे कुण्ठा, शीघ्र उत्तेजित हो जाना, नई परिस्थितियों में अपनी विचारधराओं को सुव्यस्थित न कर पाना, अपनी योग्यता पर विश्वास न होना आदि। इन सबका प्रभाव बच्चों की बृद्धि, शैक्षिक उपलब्धि के साथ–साथ मानसिक स्वास्थ्य तथा समायोजन पर यथेष्ट रूप से पड़ता है।

किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए स्वस्थ शरीर के साथ–साथ स्वस्थ मस्तिष्क का होना अत्यन्त आवश्यक है। व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य का जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उसके समायोजन पर प्रभाव पडता है। मानसिक रूप से व्यक्ति तभी स्वस्थ रहेगा जब उसका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा होगा और शारीरिक स्वास्थ्य तभी अच्छा होगा जब उसका सामाजिक–आर्थिक स्तर अच्छा होगा।

बालक के सम्पूर्ण विकास के लिए अच्छा मानसिक स्वास्थ्य होना आवश्यक है। अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के अभाव में बालक का विकास अवरूद्ध हो जाता हैं। विभिन्न सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों से समायोजन वे बालक ही कर सकते है जो किसी मानसिक रोग के शिकार नही है। इस प्रकार मानसिक रूप से अस्वस्थ्य बालकों के मानसिक एवं भावात्मक विषमताओं के कारण व्यवहार भी अवांछनीय हो जाते है। जिसके परिणाम स्वरूप संस्था एवं समाज में अव्यवस्था आ जाती हैं। संक्षेप में एक सामान्य व्यक्ति में जब किसी का सोचने–विचारने एवं व्यवहार करने का ढंग बहुत भिन्न होता है। तब उसे अवांछनीय समझा जाता है तो ऐसा माना जाता है कि उस व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य असंतुलित हो गया है। जिस प्रकार मानसिक रूप से अस्वस्थ्य व्यक्ति के कुछ लक्षण होते है ऐसे बालक कठिन एवं तनाव–पूर्ण परिस्थिति में भी अपना सन्तुलन नही खोते, वे सब के साथ अच्छा व्यवहार करते है, वे अपने संवेगों पर अपना नियंत्रण रखते है उनके सोचने का ढंग व्यवहारिक एवं सकारात्मक होता है उनके मस्तिष्क में द्वन्द एवं ग्रन्थियाँ नहीं होती है।

अध्ययन का उद्‌देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्न उद्‌देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. परास्नातक स्तर पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. परास्नातक स्तर पर पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. परास्नातक स्तर पर सामान्य जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन में उद्‌देश्यों की पूर्ति के लिए निम्न परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

Scanned with CamScanner

1. परास्नातक स्तर पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।
2. परास्नातक स्तर पर पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।
3. परास्नातक स्तर पर सामान्य जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोधकर्त्री द्वारा नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद में अध्ययनरत् परास्नातक स्तर के 75 विद्यार्थियों का चयन जाति के आधार पर (अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति एवं सामान्य जाति) का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया है। उपकरण के रूप में डॉ. जगदीश, मनोविज्ञान विभाग, आर.बी.एस. कालेज, आगरा एवं डॉ. ए.के. श्रीवास्तव, मनोविज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के द्वारा 1983 में निर्मित मानसिक स्वास्थ्य बैट्री तथा डा0 बीना शाह, शिक्षा संकाय, गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल) द्वारा निर्मित सामाजिक–आर्थिक स्थिति मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु सहसम्बन्ध गुणांक (कार्ल पियर्सन गुणन आघूर्ण विधि) का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

उद्देश्य–1 परास्नातक स्तर पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

H_{01} परास्नातक स्तर पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–1

परास्नातक स्तर पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

क्रमांक	सहसम्बन्ध गुणांक	स्वतंत्र्यांश (df) (N-2)	सार्थकता स्तर
1.	r = 0.0389	23	असार्थक

यह प्राक्कल्पित किया गया था कि परास्नातक स्तर पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है। परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.0389 आया, जो 23 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.396 से कम है। यह मान 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक है व शून्य परिकल्पना स्वीकार्य है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि परास्नातक स्तर पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं है।

Scanned with CamScanner

उद्देश्य–2 परास्नातक स्तर पर पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

H_{02} परास्नातक स्तर पर पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–2

परास्नातक स्तर पर पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

क्रमांक	सहसम्बन्ध गुणांक	स्वतंत्र्यांश (df) (N-2)	सार्थकता स्तर
1.	r = 0.4814	23	सार्थक

यह प्राक्कल्पित किया गया था कि परास्नातक स्तर पर पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है। परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.4814 आया, जो 23 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.396 से अधिक है। यह मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है व शून्य परिकल्पना अस्वीकार्य है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि परास्नातक स्तर पर पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।

उद्देश्य–3 परास्नातक स्तर पर सामान्य जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

H_{03} परास्नातक स्तर पर सामान्य जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–3

परास्नातक स्तर पर सामान्य जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

क्रमांक	सहसम्बन्ध गुणांक	स्वतंत्र्यांश (df) (N-2)	सार्थकता स्तर
1.	r = 0.4395	23	सार्थक

यह प्राक्कल्पित किया गया था कि परास्नातक स्तर पर सामान्य जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है। परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.4395 आया, जो 23 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.396 से अधिक है। यह मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है व शून्य परिकल्पना अस्वीकार्य है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि परास्नातक स्तर पर

Scanned with CamScanner

सामान्य जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- परास्नातक स्तर पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं है।
- परास्नातक स्तर पर पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।
- परास्नातक स्तर पर सामान्य जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि परास्नातक स्तर के पिछड़ी एवं सामान्य जाति विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया अर्थात् पिछड़ी एवं सामान्य जाति विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च होने पर मानसिक स्वास्थ्य उच्च होगा जबकि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य से कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1 **सिंह, सजीव (2008),** +2 स्तर पर छात्रों की बुद्धि एवं समायोजन पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।

2 **राठौर, अमित कुमार (2008),** माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम का विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि एवं समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।

3 **शांकीन, अंजली एण्ड मोहन्ती, एस0के0 (2008).** ''ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट ऑफ एडोलसेंट ब्यावज एण्ड गर्ल्स ऑफ वर्किंग एण्ड नान वर्किंग मदर्स, इन्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, नजफगढ़ नई दिल्ली।

4 **मिश्र, कृष्ण मोहन (2011).** स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की दुश्चिंता का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, राम अवध लोहिया विश्वविद्यालय, फैजाबाद।

5 **गौड़, लाल बहादुर (2011).** उच्च माध्यमिक स्तर के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, राम अवध लोहिया विश्वविद्यालय, फैजाबाद।

6 **कुमार, अश्वनी (2013).** हाईस्कूल स्तर के अनुदानित तथा गैर अनुदानित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।

7 **यादव, अजीत कुमार (2013).** उच्च माध्यमिक स्तर के एकल एवं सह शिक्षण संस्थाओ में अध्ययनरत् किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।

Scanned with CamScanner

सांस्कृतिक संघर्ष का समाधान : संस्कृतियों का सम्मान एवं उत्तरदायित्व

डॉ. अतुल कुमार मिश्र

शैक्षिक परामर्शदाता (दर्शनशास्त्र)
उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

हमारा कर्तव्य है कि हम अन्य संस्कृतियों या सभी संस्कृतियों को बराबर सम्मान दें। हम इसे प्रायः यह समझ लेते हैं कि इसका तात्पर्य है कि हम अन्य व्यक्तियों का सम्मान करें। लेकिन इसमें अन्य चीजें जैसे–दूसरे की स्वायत्तता का सम्मान करना, इच्छानुसार जीवन को चलाने के अधिकार का सम्मान करना भी आता है। हालांकि यह हमारे उस अधिकार को नहीं छीनता जिसमें हम अन्य जीवन पद्धतियों का विश्लेषण कर उनकी आलोचना करते हैं। उनके अच्छे बुरे पहलुओं को उजागर करते हैं। हमारा यह विश्लेषण उनके विचार धरातल पर आधृत सहानुभूति परक समझ पर आधारित होना चाहिए, नहीं तो अपनी एकांगी विचारधारा से हम उनके साथ न्याय नहीं कर पायेंगे।[1]

इस संदर्भ में संस्कृति के दो आयाम हैं पहला, समुदाय जिससे वह संस्कृति सम्बन्धित है एवं दूसरा उस संस्कृति की सामग्री (कन्टेन्ट) एवं चरित्र। अतः किसी संस्कृति का सम्मान करना, उसके समुदाय के अधिकारों एवं उस संस्कृति की सामग्री और चरित्र का सम्मान करना है। इन दोनों आयामों को सम्मान देने के अलग–अलग आधार हैं। हम प्रथम आयाम का सम्मान करते हैं क्योंकि प्रत्येक मनुष्य को यह अधिकार होना चाहिए कि वह कैसी जीवन शैली अपनाएगा जो कि उसको उसके इतिहास एवं पहचान से जोड़ती हो। प्रत्येक समुदाय को अपनी विशिष्ट संस्कृति का पालन करने का अधिकार मिलना मिलना ही चाहिए। यहां असमानता का कोई भी आधार नहीं होना चाहिए।

जब हम संस्कृति की बात करते हैं तो इसका सम्मान इस मूल्यांकन पर आधारित होता है कि वह इसके सदस्यों को जीवन का कितना अच्छा आकार प्रदान करती। मनुष्य ऐतिहासिक प्राणी है उसका विकास अपने सांस्कृतिक अतीत की समृद्धियों को ही आत्मसात कर लेने से ही होता है।[2] चूंकि प्रत्येक संस्कृति मानव–जीवन को स्थायित्व एवं अर्थ देती है उसके सदस्यों को बांधे रखती हैं सृजनात्मक ऊर्जाओं को प्रदर्शित करती है। मानव के विभिन्न अभिवृत्तियों को कलाओं के माध्यम से शान्त करती है इसलिए संस्कृति को सम्मान मिलना ही चाहिए हालांकि किसी संस्कृति के सावधानी पूर्वक एवं सहानुभूति पूर्ण परीक्षण के बाद हम पा सकते हैं कि कोई संस्कृति जीवन पद्धति की जो सम्पूर्ण गुणवत्ता हमें देती है, वह पर्याप्त नहीं है तथा वह वांछनीय गुणवत्ता से कमी रखती है तो हमें उसे अन्य लाभ परक संस्कृतियों की अपेक्षा कम सम्मान देने लगते हैं। परन्तु सभी संस्कृतियां आधारभूत सम्मान की मांग करती हैं क्योंकि प्रत्येक में कुछ न कुछ खास मूल्यवान पहलू जरूर होते हैं। लेकिन सभी संस्कृतियां सभी के

Scanned with CamScanner

लिए एक समान मूल्यवान एवं गुणवत्तायुक्त नहीं हो सकती है। हमें संस्कृति का मूल्यांकन करते समय सिर्फ अपने ही दृष्टिकोण से उसका परीक्षण नहीं करना चाहिए, बल्कि सार्वभौमिक आधारों पर उसकी जीवन शैली को तौलना चाहिए। यदि कोई सांस्कृतिक समुदाय मानवीय मूल्य और अस्मिता को आदर देता है, उसके संसाधनों के आधार पर मूलभूत मानवीय हित की रक्षा करता है अन्य समुदाय के लोगों को किसी प्रकार की कोई धमकी नहीं देता है उसके सदस्य अपनी संस्कृति के गौरव में निष्ठा रखते हैं और इस कारण सद्जीवन को प्राप्त करने के लिए सभी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति वह संस्कृति करती है तो निश्चय ही वह संस्कृति की आदरणीय है।

किसी संस्कृति का सम्मान करना, उसके समुदाय के अधिकारों एवं उस संस्कृति की सामग्री और चरित्र का सम्मान करना है। चूंकि प्रत्येक संस्कृति मानव–जीवन को स्थायित्व एवं अर्थ देती है उसके सदस्यों को बांधे रखती हैं सृजनात्मक ऊर्जाओं को प्रदर्शित करती है। इसलिये प्रत्येक समुदाय को अपनी विशिष्ट संस्कृति का पालन करने का अधिकार मिलना मिलना ही चाहिए। यहां असमानता का कोई भी आधार नहीं होना चाहिए।

जो यह मानते हैं कि कुछ संस्कृतियां श्रेष्ठ होती हैं और अपने मूल्य को अन्य संस्कृतियों में आरोपित करना उनका अधिकार होता है वह समुदाय के उस अधिकार का हनन करते हैं जो उन्हें अपनी मान्यताओं और मूल्यों को चुनने के लिए मिलती है।

वस्तुतः किसी भी समुदाय की सदस्यता उसके प्रति उत्तरदायित्व की मांग करती है। सांस्कृतिक समुदाय भी इससे अछूता नहीं है। यह उत्तरदायित्व प्रश्न खड़ा करता है कि क्या संस्कृति के प्रति जवाबदेही है? हाल के वर्षों में कई लेखकों ने विशिष्ट या रोष या तीखेपान के साथ इस प्रश्न को उठाया है। द सटैनिक वर्सेज की प्रकाशन के बाद एडवर्ड ने सलमान रुश्दी की आलोचना की क्योंकि उन्होंने अपने समुदाय के जन्मजात ज्ञान का प्रयोग पश्चिम के पक्षपात पूर्ण मुस्लिम विरोधी भावना को पुष्ट करने के लिए किया। श्वेत लोगों के सांस्कृतिक एवं नस्लीय भेदभाव को बढ़ावा देने के लिए भी कई अफ्रीकी मूल के अमेरिकियों पर भी धोखेबाजी एवं संस्कृति से विद्रोह करने का आरोप लगाया जाता है। जो अपनी समुदाय की मान्यताओं के लिए खड़े नहीं हुए या फिर दूसरे खेमे में चले गये।

जैसा कि हम देखते हैं कि सांस्कृतिक समुदाय के दो आयाम हैं पहला सांस्कृतिक एवं दूसरा सामुदायिक जब हम सांस्कृतिक समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व एवं वफादारी की बात करते हैं तो हमारा आशय दोनों आयामों से होता है।

प्रथम दृष्टया, संस्कृति के प्रति उत्तरदायित्व या जवाबदेही का विचार विचित्र लगता है क्योंकि यह स्पष्ट नहीं है कि निर्वैयक्तिक या अमूर्त संकल्पना संस्कृति के साथ मनुष्य का नैतिक सम्बन्ध कैसा हो सकता है। परन्तु जितना विचित्र यह दिखता है उतना है नहीं। हम प्रायः वैज्ञानिकों एवं कलाकारों की उनके विज्ञान एवं कला के प्रति कर्तव्य की बात करते हैं। इसका तात्पर्य है कि उन्हें सम्बन्धित उत्तरदायित्व की केन्द्रीय धारणा एवं मूल्यों के प्रति निष्ठावान रहना चाहिए।[3] एक वैज्ञानिक को सत्य का अनुसरण एवं प्रमाणों का औचित्यपूर्ण परीक्षण करना चाहिए। वहीं कलाकार को कल्पना के निर्भय अभ्यास एवं कलात्मक सत्य के प्रति

Scanned with CamScanner

जागरूक रहना चाहिए। इसी प्रकार धार्मिक लोग धर्म के सिद्धांतों के प्रति एवं उदारवादी, उदारवादी परम्परा के सिद्धांतों एवं मूल्यों के प्रति वफादार रहने की बात करते हैं। इसी अर्थ में संस्कृति के प्रति उत्तर दायित्व का तात्पर्य है कि संस्कृति से सम्बन्धित जीवन पद्धति के घटक जैसे मूल्यों, आदर्शों, महत्व और अर्थ की व्यवस्थाओं नैतिक एवं आध्यात्मिक संवेदनाओं के प्रति अपने विश्वास को अडिग रखना।

प्रश्न उठता है कि इस उत्तरदायित्व के आधार की सामग्री क्या है? जैसा कि हम जानते हैं कि संस्कृति हमारे जीवन को गति प्रदान करती है। संसाधनों का उपयोग करना सिखाती है, हमारे व्यक्तित्व को स्थिरता प्रदान करती है। इसके मूल्य एवं आदर्श हमें प्रेरित करते हैं। यह परम्पराएं, गीत कहानियां, साहित्य एवं संगीत हमारे जीवन में खुशियों और आनन्द के रंग भरते हैं। यह हमारे जीवन को पग पग पर निर्देशित करते है और नैतिक एवं आध्यात्मिक बुद्धि प्रदान करके हमें जीवन के कठिन समय में स्थिर रहना सिखाती है।[4] यह सब इंगित करता है कि हमारी संस्कृति ने हमारे लिए क्या–कुछ किया है। हम यह भी कह सकते हैं कि इसके आदर्शों सौन्दर्यात्मक आध्यात्मिक विश्वासों एवं अन्य गतिविधियों एवं उपलब्धियों ने मानव जीवन के मूल्यवान दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया है जो कि मानवता के सांस्कृतिक और नैतिक पूंजी को समृद्ध करता है।

इस कारण हम सोच सकते हैं कि संस्कृति के प्रति हमारी वफादारी इसलिए होनी चाहिए क्योंकि हमारे जीवन में असीम योगदान दिया है और शायद इस कारण भी कि इसका एक सार्वभौमिक मूल्य है। अगर हमें लगता हो कि कोई संस्कृति मूल्यहीन है, उसके आदर्श अत्यधिक उत्पीड़क हैं, हमें अच्छा जीवन जीने की कला सिखाने के लिए उसके पास मूल्य नहीं है वह हमारे बौद्धिक एवं नैतिक एवं बौद्धिक विकास को अवरुद्ध कर सकती है तो हमारी वफादारी निश्चित रूप से उसके प्रति कमजोर होगी। (कोई भी संस्कृति पूर्णतः मूल्यहीन नहीं हो सकती।) लेकिन यदि हमारी संस्कृति मानव जीवन को सवंर्द्धित करने के लिए संसाधनों का उचित प्रयोग बताती है, मानवीय संबंधों को मजबूत करती है इसके सदस्यों के मध्य सत्य, विश्वास को आदि स्थापित करती है एवं सद्गुण तथा शुभ के स्रोत के रूप में है तो निश्चित तौर पर उसके प्रति हमारी जवाबदेही बनती है।

यदि हमारी संस्कृति औचित्यपूर्ण या न्यायपूर्ण तरीके से समृद्ध है तो हमारा कर्तव्य है कि हम उन महान पुरुषों की स्मृतियों को हृदय में संजोए जिन्होंने इसके निर्माण में अपना योगदान दिया और जिन्होंने लम्बे समय के दौरान इसे बनाए रखा। इसके पवित्र आदर्शों का विस्तार एवं प्रदर्शन करें जिसमें कि कृतज्ञता की एवं सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रतिबद्धता का समर्पित भाव हो। हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम इसका संवर्द्धन करें एवं आगामी पीढ़ियों को इसकी मूल्यवान बातें समझाएं एवं गलत व्याख्यायित या समझे जाने वाली मान्यताओं का उचित तर्कों के साथ समाधान करें। इसके अलावा संस्कृति को तोड़ने वाली एवं आघात पहुंचाने वाले कुत्सित प्रयासों से भी इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य होना चाहिए। विचारणीय है कि हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत के समृद्ध मूल्यों को दूसरी संस्कृति से कमतर समझकर जल्दबाजी में त्यागना नहीं चाहिए संस्कृति के प्रति उत्तरदायित्व में संसाधनों को उजागर करना, मजबूत करना एवं पुष्ट करना एवं उसकी खामियों को दूर करना भी सम्मिलित है। कोई भी संस्कृति

Scanned with CamScanner

पूर्ण नहीं है वह तो विश्वासों एवं नियमित क्रिया कलापों की एक व्यवस्था है जो कि कुछ मूल्य और आदर्श लोगों के लिए प्रस्तुत करती है। किसी संस्कृति से प्रेम करने का आशय उसकी समृद्धि की कामना करना है जिसमें कि उसकी आलोचना करना एवं दोषों का परिमार्जन करना भी सम्मिलित है।

समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व की अवधारणा सामान्यतः सुनने में आती है। यह आदर्शों, मूल्यों एवं अन्य सांस्कृतिक घटकों के प्रति वफादारी नहीं है बल्कि उन पुरुषों एवं महिलाओं के प्रति है जिन्होंने समुदाय का निर्माण किया है। प्रायः हम अपने परिवार, विद्यालय, राजनीतिक एवं धार्मिक समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व की भावना रखते हैं। हम उनके प्रति आभारी हैं क्योंकि यह सब हमें सहयोग, घनिष्ठता, नैतिक एवं भावनात्मक संसाधनों तथा मूलाधारों की संवेदनाओं की एक संरचना प्रदान करते हैं जो हमारे विभिन्न कार्यों में हमारी सहायता करते हैं। चूंकि संस्कृति किसी समुदाय द्वारा ही संरक्षित की जा सकती है इसलिए हम संस्कृति को जीवन्त रखने के लिए भी समुदाय के ऋणी रहते हैं। हमारी वफादारी की भावना उस समय और प्रबल हो जाती है जब बाहरी धमकियों या आक्रमणों या चिंताओं से किसी समुदाय के विखण्डन का खतरा पैदा होता है। जैसा कि यातनादायी एवं पीड़ादायी अनुभवों को यहूदियों ने विनाशकारी संहार के वक्त सहा था। इसी कारण आगे चलकर उनके कर्तव्यों में एक नया आयाम जुड़ा कि उन्हें लाखों लोगों जो कि मृत्यु को प्राप्त हुए थे, की स्मृतियों को तथा उनके मध्य घनिष्ठता को हृदय में संजोए रखना होगा।

सांस्कृतिक संस्था, राजनीतिक दलों, दबाव समूहों आदि की तरह स्वैच्छिक संगठन नहीं है यदि इसे ऐसा समझा जाता है तो यह भ्रामक है। सांस्कृतिक समुदाय मानव की सृजनात्मकता नहीं है बल्कि संघर्षों एवं उपलब्धियों की लम्बी सामूहिक स्मृतियों एवं सुस्थापित व्यवहारों की परम्पराओं से युक्त ऐतिहासिक समुदाय है। हम इनसे जुड़ते नहीं बलिक इनमें पैदा होते हैं। हम इनके सदस्य नहीं बल्कि भाग होते हैं। हमारे संगठन की पहचान निर्वाचन से होती है जबकि सांस्कृतिक पहचान हमें विरासत में मिलती है।

सांस्कृतिक संगठन मानव–जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करता है जो कि स्वैच्छिक संगठन कभी नहीं कर सकते। यह इसके सदस्यों को अस्तित्व परक स्थायित्व, प्राचीन एवं आधुनिक उद्‌गम की भावनाओं से जुड़ाव संचार की सरलता एवं अन्य लाभ प्रदान करती है। हमारे जीवन में स्वैच्छिक संगठनों एवं सांस्कृतिक समुदाय दोनों का पूरक स्थान है और मानवीय ज्ञान तथा मेधा तभी उभरकर सामने आयेगी जब ये दोनों सहभागी होकर कार्य करेंगे।

किसी सांस्कृतिक समुदाय के प्रति वफादारी कुछ कर्तव्यों की ओर इंगित करती है जो कि संस्कृति के प्रति वफादारी के कर्तव्यों से भी मेल खाती है या समानता रखती है। यह कर्तव्य किसी समुदाय के सदस्यों के प्रति होती है न कि संस्कृति के आदर्शों के प्रति। यह वफादारी तब भी रहती है जब हम किसी संस्कृति को अस्वीकार कर देते हैं। नियमों– कानूनों, परम्पराओं, मूल्यों, व्यवहारों की संरचना, जो कि किसी समुदाय की रचना करती है, एक लम्बी अवधि में निर्मित होती है। हम उसे प्राप्त करते हैं, लाभान्वित होते हैं और उसका परिवर्धन करते हैं। अपने निहित स्वार्थों के लिए समुदाय को चोट पहुंचाना एक घृणित कार्य है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम विभिन्न आक्षेपों और गलत व्याख्याओं का उत्तर निर्भीकतापूर्वक आलोचनाकारों

Scanned with CamScanner

को दें। समुदाय के प्रति हो रहे अन्याय के प्रति लड़ना और न्याय दिलाना भी हमारा कर्तव्य होता हैं महात्मा गांधी अपने समुदाय से अत्यंत प्रेम करते थे इसलिए वह अस्पृश्यता, बाल विवाह एवं जाति–विभेद आदि सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध थे। हमारा भी उत्तरदायित्व अपने समुदाय की प्रचलित लाभकारी परम्पराओं को पुष्ट करना व हानिकारक विश्वासों को उन्मूलित करना होना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1 Storey Jhon : What is Cultural Studies? A Reader. Bloomsbury Academic, 1996, Page – 247

2 डॉ. देवराज : दर्शन धर्म अध्यात्मक और संस्कृति, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2005। (पेज– 170)

3 Parekh Bhikhu, Rethinking Multiculturalism- Cultural Diversity and Political Theory, Palgrave Macmillan, 2005. Page-145-46.

4 डा.कार्टन डेविड सी : जब दुनिया में निगमों का राज चले, आजादी बचाओ आन्दोलन प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002, पेज 235

Scanned with CamScanner